

संगीत त्रिवेणी

(गायन-वादन-नर्तन)

उत्तर भारतीय संगीत (गायन, वादन, नृत्य) के विविध आयाम



डॉ. आनंद तिवारी
प्राचार्य/संरक्षक

डॉ. हरिओम सोनी
सम्पादक

डॉ. अपर्णा चार्चोदिया
सम्पादक

आयोजक-संगीत एवं नृत्य विभाग



शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता
महाविद्यालय सागर (म.प्र.)



प्रकाशक : रागी पब्लिकेशन एण्ड इंटरप्राइजेज
चैतन्य हास्पिटल के पास में, सैनी के कुआँ के सामने,
वृन्दावन वार्ड, तिली रोड, सागर (म.प्र.)
ई मेल : ragipublicationandenterprises@gmail.com
सम्पर्क : 9039515004

प्रकाशन वर्ष : 2023

संस्करण : प्रथम

मूल्य : 300 / -

सम्पादक मंडल :

डॉ. हरिओम सोनी

डॉ अपर्णा चाचोंदिया

Book Name-Sangeet Triveni

ISBN.No.-978-93-340-4240-5

अक्षर संयोजन एवं मुद्रण

रॉयल कम्प्यूटर्स,

वनवे परकोटा रोड, सागर (म.प्र.)

मो. : 9425452106

नोट-प्रस्तुत प्रोसिडिंग में शामिल किये गए समस्त शोध पत्रों की सामग्री एवं तथ्यों की सम्पूर्ण जबाबदारी लेखकों की होगी इस हेतु सम्पादक या समिति किसी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होगी।

अनुक्रमणिका

क्र	विषय	पृष्ठ
1.	भारतीय राग चिकित्सा – समालोचनात्मक विश्लेषण डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर	01
2.	नृत्यकला एवं रासलीला डॉ. अपर्णा चाचौदिया	07
3.	वर्तमान परिवेश में संगीत घरानों की प्रासंगिकता डा. प्रेम कुमार चतुर्वेदी	11
4.	विकसित अवनद्य वाद्य – तबला (एक दृष्टिपात) डॉ. विभूति मलिक	17
5.	नृत्य कला में नायिका भेद प्रो. डॉ. नीता गहरवार	22
6.	संगीत में घराने – गुण एवं दोष प्रो. डॉ. अलकनंदा पलनीटकर	26
7.	गुप्त कालीन संगीत, गायन एवं वादन प्रॉफेसर नवीन गिडियन	30
8.	बंदिश एवं नवसृजन पंडित देवेन्द्र वर्मा	34
9.	हिन्दी के गीतों में संगीत डॉ. नरेन्द्र सिंह ठाकुर,	43
10.	देश के सामाजिक आर्थिक विकास में संगीत कलाकारों की भूमिका प्रॉफेसर नित्यानंद चौधरी	46
11.	प्राचीन ताल पद्धति का विश्लेषणात्मक विवेचन डॉ. गुलशन सक्सेना	51
12.	ताल के दस प्राण हरविंदर बीर कौर	55
13.	संगीत, संस्कृति और समाज डॉ. मालती दुबे	59
14.	संगीत कला का व्यवसायीकरण डॉ. प्रियंका शेण्डे	61
15.	कथक नृत्य में नायिकाओं की अष्टावस्था प्रो. वन्दना चौबे	65

16.	कला का व्यवसायीकरण और सोशल मीडिया की भूमिका एक विश्लेषणात्मक अध्ययन डॉ. रश्मि शर्मा	72
17.	संगीत संस्कृति और समाज डॉ. डी.के. गुप्ता	78
18.	मानव जीवन में संगीत और स्वास्थ्य श्रीमती रागिनी श्रीवास्तव	80
19.	भारतीय संगीत के विविध आयामों में महिलाओं की स्थिति और भूमिका प्रीति वर्मा	84
20.	विभिन्न संगीत शैलियों के साथ विभिन्न तालों का सामांजस्य शैलेन्द्र सिंह राजपूत	88
21.	संगीत में अवनद्ध वाद्यों का विकास एवं महत्व संदर्भ—तबला शैलेन्द्र वर्मा/डॉ. रवि कुमार पण्डोले	92
22.	भारतीय संगीत गायन के विविध आयाम डॉ. जितेन्द्र कुमार शुक्ला	96
23.	हिन्दी साहित्य में चौमासा (आषाढ़, सावन, भाद्रपद, अश्विन) लोक, ललित का मूल आधार राघवेन्द्र प्रताप सिंह/डॉ. सुजीत देवघरिया	100
24.	युवा पीढ़ी का पाश्चात्य संगीत की ओर रुझान कृष्ण कुमार कटारे	106
25.	महिलाओं से संबंधित मनोविकारों के निवारण में संगीत चिकित्सा की प्रासंगिकता वर्षा मीणा/डॉ. संतोष मीणा	108
26.	भारतीय रंगमंच का स्वरूप एवं सांस्कृतिक परंपरा अंजलि वर्मा	114
27.	तबले की उपशास्त्रीय वादन शैली डॉ. राहुल स्वर्णकार	117
28.	बुन्देली लोकगीतों में सांस्कृतिक चेतना डॉ. सरिता जैन	123
29.	मनोचिकित्सा में संगीत का प्रयोग डॉ. हरीश वर्मा	125
30.	अभ्यास एवं साधना (आध्यात्मिक अध्ययन) आकाश जैन	128
31.	सितार वादन करने हेतु तकनीक का महत्व—एक अध्ययन डॉ. अमनदीप कौर	132

32.	शास्त्रीय संगीत, नृत्य में रोजगार के अवसर गरिमा भार्गव	138
33.	कथक नृत्य की धार्मिक एवं आध्यात्मिक पृष्ठभूमि डॉ. योगिता मंडलिक	140
34.	धार्मिक पृष्ठभूमि पर अवस्थित नृत्यकला कल्पना कुमारी	142
35.	उत्तर भारतीय संगीत (गायन, वादन, नृत्य) के विविध आयाम संगीत, संस्कृति और समाज अनुराग गुरु	146
36.	मध्यभारत के प्रमुख जनजातीय नृत्यों में अवनद्य वाद्यों की भूमिका सरगम खान	149
37.	संगीत संस्कृति और समाज अमोल शेषराव गवई	154
38.	संगीत और साहित्य का अन्तर्संबंध सत्येंद्र सिंह पटेल	156
39.	धार्मिक पृष्ठभूमि पर अवस्थित नृत्यकला कथक नृत्य एवं ईश्वर उपासना सुश्री योगिता सरोया	159
40.	विभिन्न ग्रंथों में वर्णित अवनद्य वाद्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन तेजस पटेल	161
41.	कथक नृत्य प्रस्तुति में आहार्य अभिनय डॉ. संगीता ठाकुर	166
42.	भारतीय शास्त्रीय नृत्यों में प्रयोगधर्मिता कथक नृत्य के संदर्भ में डॉ. अमित साखरे	169
43.	संगीत, संस्कृति एवं समाज डॉ. रविन्द्र कुमार ध्रुवे	172
44.	संगीत का स्वास्थ्य में योगदान पायल कुमारी	174
45.	कथक नृत्य प्रदर्शन में तुलसीकृत रचनाओं की उपादेयता सुश्री रेखा मालवीय	177
46.	ताल के दस प्राण डॉ. कृष्णा बाला सिंह	180
47.	धार्मिक पृष्ठभूमि पर अवस्थित कथक नृत्य डॉ. नरेन्द्र कुमार ध्रुव	185

48.	गुप्त कालीन नृत्य एवं अभिनय डॉ. अंजलि दुबे	188
49.	मार्ग और देशी संगीत कलाएँ विशाखा तिवारी मिश्रा	191
50.	तबला स्वतंत्र वादन में गत वादन का स्वरूप एवं महत्व (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन) गगन राज/आकाश जैन	196
51.	संगीत के अध्ययन-अध्यापन में ई-संसाधनों की भूमिका मितेन्द्र सिंह सेंगर	200
52.	New teaching policy 2020 and today's student with music subject Dr. HARIOM SONI	206
53.	CHEMISTRY BEHIND THE MUSIC Dr. A.H. Ansari	208
54.	The Dynamism of Indian painting under the patronage of the Mughals Dr. Ashish Kumar Chachondia	211
55.	Interrelation between music and chemistry: An Overview Dr. Santosh Narayan Chadar	215
56.	Music and Mental Health Mayuresh Namdeo/ Dr. Santosh Kumar Gupta	219
57.	Creativity in Choreography by Kumudini Lakhia, an Initial Journey Jayti Brahmbhatt / Prof. Vandana Chaubey	225
58.	DANCE BASED ON RELIGIOUS BACKGROUND Kavisha Sabharwal	228
59.	Personality Development and Employment Prospects Through Classical Dance Mrs. Manjusha Rajas Johari / Prof. Vandana Chaubey	232
60.	Use of music in EFL [English as a foreign language] Mrs. Vibha Soni	235
61.	Contribution of Women in Dance Arshdeep Kaur Bhatti	237
62.	Utility of Music in Indian Society Priyam Chaturvedi	241
63.	Music as an incredible medicine: A cure for wide range of diseases and disorders Vaishali Prajapati	245
64.	Psychology and Music Therapy Koustubh Pare	251
65.	The Importance of Music Education in India Vishal V. Korde	254
66.	Ten Elements of Taal (Taal Ke Das Pran) Sompura Krupal Chetanbhai	259

संगीत, संस्कृति और समाज

डॉ. मालती दुबे

सह-प्राध्यापक

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

प्राचीन समय से ही संगीत की परम्परा समाज में धर्म, दर्शन, संस्कृति का आधार स्तंभ रही। समाज में विद्यमान प्रत्येक धर्म के अनुयायी संगीत के माध्यम से अपने इष्ट की उपासना करते हैं। प्रत्येक काल में संगीत ने समाज को प्रभावित किया है। संगीत हर मनुष्य के जीवन का आवश्यक अंग है। कोई पर्व हो, कोई त्यौहार हो, या संस्कार, ऐसा नहीं है जिस में संगीत न हो।

समाज में प्रचलित परम्पराएँ व प्रथाएँ संगीत के बिना पूर्ण नहीं हो सकती हैं। संगीत मनुष्य के जीवन में नीरसता को दूर करके नवीन स्फूर्ति भरता है और समाज को उन्नति की ओर अग्रसर करता है समाज में प्रचलित संस्कार गीत, विवाह गीत, जन्म के समय गाये जाने वाले गीत, ऋतु गीत, वसंत व वर्षा आदि मल्हार से सम्बन्धित गीतों के माध्यम से हर समय सामाजिक जीवन में मनुष्य के आसपास संगीत विद्यमान रहता है। संगीत ही समाज में फैले ऊँच-नीच के भेदभाव को समाप्त कर सकता है। संगीत समाज के आन्तरिक और बाह्य पक्ष को पोषित कर आनन्दमय बनाता है। संगीत कला अपने आप में कई ऐसी विशेषताएँ लिए हुए है जिसमें मनुष्य समाज के लिए भावनाओं से पूर्ण होकर मानवता के विकास में सहायक हो जाता है।

संगीत में भावनात्मक और मानसिक रूप से व्यक्ति को ठीक करने के महान गुण होते हैं। संगीत का समाज में घनिष्ठ और अटूट सम्बन्ध होता है। संगीत हमारे समाज का अभिन्न अंग है। संक्षेप में, संगीत में संस्कृति, भावनात्मक और चिकित्सा द्वारा हमारे समाज को प्रभावित करने की शक्ति है, हम अपने संगीत के माध्यम से जितनी ध्वनियाँ, संदेश और मूड बनाते हैं और रिलीज करते हैं, हम उतने ही अधिक शक्तिशाली हो जाते हैं जो हमारे जीवन में सकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

संस्कृति एवं संगीत -

किसी भी देश की संस्कृति की झलक हमें वहाँ के सामाजिक परिवेश, मान्यताओं, साहित्य, संगीत, कला आदि अंगों में प्राप्त होती है। संस्कृति मानव चेतना का एक ऐसा विकास क्रम है जो उसके अंतरंग एवं बहिरंग पूर्ण रूप से परिष्कृत करके एक विशेष जीवन पद्धति का सृजन करता है। संस्कृति के द्वारा ही मनुष्य जाति में सर्वोत्तम मानसिक एवं सामाजिक गुण उत्पन्न होते हैं जिसमें मानवता का संस्कार, शिक्षा-दीक्षा, रहन-सहन और परम्पराएँ उद्घाटित होता है। संस्कृति एक विरासत होती है जोकि निरंतर संचय में विकसित होती रहती है। अतः कहा जा सकता है कि संगीत में भारतीय संस्कृति के आदर्श मान्यताओं एवं विचारों को उचित स्थान दिया गया है।

संगीत पर सबसे महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रभावों में प्रवासन, युवा संस्कृति का विकास और नस्लीय एकीकरण शामिल है।

संगीत एक समाज की संस्कृति और लोककथाओं को दर्शाता है जैसा कि राष्ट्रीय लय, देशभक्ति के गीतों और शास्त्रीय साहित्य, महाकाव्यों और वीर कविताओं में प्राप्त पारम्परिक गीतों द्वारा देखा जाता है। गीत और संगीत समाज के इतिहास, मूल्यों, परम्पराओं, और दृष्टिकोण को दर्शाते हैं।

संस्कृति और समाज में अन्तर -

संस्कृति का अर्थ मान्यताओं, प्रथाओं, नैतिक मूल्यों से है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में पारित होते हैं। समाज का अर्थ है उन लोगों का एक अन्योन्याश्रित समूह जो एक विशेष क्षेत्र में एक साथ रहते हैं और एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं।

संगीत का समाज में महत्त्व -

संगीत बहुत ही शक्तिशाली माध्यम है और अभीतक काफी सकारात्मक संदेश पहुंचाता है। हमें संगीत द्वारा काफी सहायता मिलती है। संगीत हमारे जीवन को और भी अच्छा करने का कार्य करता है। संगीत की प्रकृति प्रोत्साहन तथा बढ़ावा देने की भी है, जो सभी नकारात्मक विचारों को हटाकर मनुष्य की एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाने का कार्य भी करता है।

संगीत में भावनात्मक और मानसिक रूप से व्यक्ति को ठीक करने के महान गुण होते हैं। संगीत ध्यान का एक रूप है। संगीत की रचना करते या सुनते समय व्यक्ति अपनी सभी चिन्ताओं, दुःखों और पीड़ाओं को भूल जाता है।

उपसंहार -

पूरी मानव प्रजाति के लिए संगीत भगवान द्वारा दिया गया उपहार है। यह आत्मशान्ति की कुंजी है जो हमें मानसिक व शारीरिक स्वस्थ बनाने में हमारी सहायता करता है। संगीत वो लय है जो बीते समय, पसंदीदा स्थानों, व्यक्तियों या उत्सवों आदि की सभी अच्छी यादों और सकारात्मक विचारों को लाता है। संगीत हमारे लिए काफी महत्त्वपूर्ण है और यह हमारी दैनिक जिंदगी का हिस्सा बन चुका है। संगीत हमारी आत्मा का भोजन है यह हमें सुकून देता है। हम सभी को इसके महत्त्व को समझने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ :

1. भारतीय संगीत का इतिहास - ठाकुर जयदेव सिंह, संगीत रिसर्च अकेडमी, कोलकत्ता, प्रकाशन वर्ष - 1994
2. भारत के सांस्कृतिक केन्द्र - वाराणसी, उमा पांडे, प्रकाशन द मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1980
3. <https://akankshasrivastavamusic.wordpress.com>
4. <https://ignca.gov.in>brij618>
5. <https://m.youtube.com>
6. Master Musicians of India - Regula Qureshi Edition 1st Edition First published 2007 E-book Published 27 April 2016 Pub. Location New York.